ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

अध्यापक शिक्षा

दो वर्षीय
बैचलर ऑफ एजुकेशन (बी.एड.)पाठ्यचर्या

Two Year
Bachelor of Education(B.Ed.)Curriculum

प्रस्तावना

शिक्षा एवं साक्षरता निर्विवादित रूप से किसी भी समाज के विकास के मापदंड एवं मानदंड के तौर पर देखी जाती रही हैं. कहा जाता है कि देश के प्रारब्ध का निर्माण उसकी कक्षाओं में होता है. ऐसी स्थिति में देश के प्रारब्ध-निर्माण में शिक्षक की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है. इसीलिए कहा गया है कि - किसी समाज की गुणवत्ता का स्तर उसके शिक्षकों के स्तर से प्रतिबिम्बित होता है. भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की रूपरेखा के निर्धारण का सुदीर्घ इतिहास रहा है एवं विभिन्न कालखंडों में, विभिन्न विचारधाराओं के प्रादुर्भाव एवं प्रभाव के साथ साथ,शैक्षिक प्रक्रिया एवं पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में सम्पूर्ण शैक्षिक उपक्रम के साथ साथ अध्यापक-शिक्षा के साथ भी अनगिनत प्रयोग होते रहे हैं.

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान में शिक्षा को मूल अधिकार का दर्जा दिया गया है. इसके साथ-साथ नीतिगत दस्तावेजों में शिक्षा को बाल-केन्द्रित, अनुभव आधारित एवं स्वतंत्र चेतना के विकास में उत्प्रेरक के रूप में देखा गया है. समय समय पर राष्ट्रीय स्तर पर एवं राज्यों में विद्यालयी पाठ्यचर्या के पुनरावलोकन और पुनरीक्षण के माध्यम से इन मूल्यों के पोषण का प्रयत्न भी किया जाता रहा है. अध्यापक शिक्षा की रूपरेखा पर भी समय समय पर विद्यालयी शिक्षा के सन्दर्भ में किये गए प्रयोगों एवं पुनरीक्षणों का प्रभाव पड़ा है. यद्यपि यह प्रभाव अभी भी अधिकतर सैद्धांतिक रूप से नीतिगत दस्तावेजों तक ही सीमित रहा है. शिक्षक-प्रशिक्षण अथवा अध्यापक शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर बने पाठ्यक्रम एवं उनके व्यावहारिक क्रियान्वयन के माध्यम से अभी तक छात्राध्यापक पूर्व-स्थापित विद्यालयी व्यवस्था में समायोजित होने भर के लिए ही तैयार किये जाते हैं. वर्तमान विद्यालयी व्यवस्था में सकारात्मक रूप से परिवर्तन के हेतु हस्तक्षेप के लिए शायद ही कोई शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम या अध्यापक शिक्षा की रूपरेखा प्रभावी भूमिका निभाती हो. अबतक के शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य शिक्षकों को मात्र कुछ सूचनाओं एवं शिक्षण के यांत्रिक प्रकृति के कौशलों से युक्त कर देना भर होता रहा है. इन कार्यक्रमों में न तो विद्यालय एवं समाज से जुड़े व्यापक और समसामयिक मुद्दों पर चर्चा करने का पर्याप्त अवसर होता था, न ही नए प्रकार के शैक्षणिक अनुभवों एवं विमर्श के लिए समुचित संभावना. विगत कुछ वर्षों में सैद्धांतिक रूप से भले ही छात्र-केन्द्रित शिक्षा प्रक्रिया की चर्चा होने लगी है, तथापि छात्राध्यापक अंततः उसी पुरानी विद्यालयी व्यवस्थाके यंत्रवत अंग हो जाते रहे हैं जहां पर येन-केन-प्रकारेण परीक्षा के पूर्व तक किसी प्रकार पाठ्यक्रम के समापन की संस्कृति विद्यमान है. जहाँ शिक्षक द्वारा हस्तांतरित ज्ञान को बिना प्रश्न किये स्वीकार कर लेने की परंपरा अन्तर्निहित है. अध्यापक-शिक्षा के अब तक प्रचलित कार्यक्रमों में पाठ्यचर्या, विषयवस्तु, विषयानुशासन की प्रकृति एवं पाठ्यक्रम में भाषा की केन्द्रीयता पर विमर्श की पर्याप्त संभावना नहींरही है, न ही ज्ञान के निर्माण की दिशा में किये जाने योग्य प्रयत्न के लिए समुचित अवसर प्रतीत होते हैं. अधिकतर शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षु शिक्षकों के मौलिक चिंतन एवं अनुभवों की अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर की कमी रही है. इन सब का परिणाम विद्यालयों के वर्तमान शैक्षिक स्वरूप पर दिखाई देता है.

वर्तमान शैक्षिक विमर्शों में शिक्षकों की भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है पहले की शिक्षक-केन्द्रित कक्षा की केन्द्रीय सत्ता से हटकर शिक्षक की भूमिका उस मार्गदर्शक के रूप में देखी जाने लगी है जो ज्ञान का हस्तांतरण करने की जगह छात्रों के ज्ञान निर्माण करने के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करता है एवं उनके सीखने की प्रक्रिया में सहायक की भूमिका निभाता है. शिक्षक की भूमिका का यह स्वरूप वर्तमान शिक्षक पर और अधिक उत्तरदायित्व डालता है. ज्ञान की निर्माणवादी विचारधारा शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में छात्रों की अधिक सक्रिय भूमिका को इंगित करती है जिसमें समुचित प्रेरणा प्रदान करने के उद्देश्य से शिक्षक की

भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है. वर्तमान विमर्श में शिक्षक की भूमिका स्वयं सतत ज्ञान की खोज करने वाले जिज्ञासु के रूप में, अनुसंधानकर्ता के रूप में, छात्रों की जिज्ञासा के उत्प्रेरक के रूप में देखी जाती है. यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय एवं शिक्षाशास्त्रीय अवधारणाओं के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझे एवं तदनुसार सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया में स्वयं की भूमिका को आत्मसात करे. इसके साथ ही शैक्षिक प्रक्रियाओं पर छात्र एवं शिक्षक के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सन्दर्भों के प्रभाव की समझ एवं संवेदनशीलता भी वर्तमान शैक्षिक सरोकार के अपरिहार्य तत्व हैं,जिसपर अध्यापक-शिक्षा की पाठ्यचर्या में एवं शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न स्तरों परसमुचित विमर्श की संभावना होनी चाहिए.

यह समस्त मीमांसा, अध्यापक-शिक्षा की पाठ्यचर्या में आमूल-चूल परिवर्तन की अपेक्षा करती है,जिसे ध्यान में रखते हुए बी.एड. की इस नयी पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम का निर्माण हुआ है इस पाठ्यचर्या के निर्माण में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) द्वारा सुझाए गए बी.एड. पाठ्यचर्याकी रूपरेखा के साथ साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के 'च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम' संबंधी दिशानिर्देशों को भी ध्यान में रखा गया है. यह प्रयास किया गया है कि छात्र अध्यापक-शिक्षा के आधारभूत अवयवों के साथ साथ अन्य अनुशासनों से भी अपनी रूचि के अनुसार विषयों का चयन कर सकें एवं इस प्रकार अपने ज्ञान एवं शैक्षिक अनुभव का समुचित संवर्धन एवं विस्तार कर सकें.यह अपेक्षित है कि यह पाठ्यक्रम निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति में सक्षम हो:

- छात्राध्यापक शिक्षा एवं शैक्षिक प्रक्रिया के विभिन्न अवयवों के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, एवं शिक्षाशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को समझ सकें एवं तदनुसार अपने अनुभवों एवं अंतर्दृष्टि का समुचित संवर्धन एवं विस्तार कर सकें.
- प्रशिक्षु साझे अनुभव से होने वाले ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया की विशिष्टता को व्यक्तिगत अनुभव से समझें एवं छात्रों के सीखने की प्रक्रिया के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण कर सकारात्मक रूप से उत्प्रेरक की भूमिका निभा सकें.
- शिक्षकों की सृजनात्मक क्षमता का समुचित विकास हो एवं उनमें नवाचार की प्रवृत्ति विकसित हो. साथ ही क्रियात्मक अनुसंधान के लिए उनमें आवश्यक तत्परता आए.
- शैक्षिक आकलन एवं मूल्यांकन का सीखने की प्रक्रिया के साथ सार्थक संबंध हो.
- ज्ञान को पृथकता में न समझा जाए बल्कि उसे शिक्षार्थियों के समग्र परिवेश से जोड़कर एवं विभिन्न विषयानुशासनों के साथ के अंतर्संबंध के परिप्रेक्ष्य में समझने की प्रवृत्ति विकसित हो सके.
- छात्राध्यापक अपने शिक्षण-विषयों के साथ साथ अन्य विषयों की प्रकृत्ति को भी व्यापक अर्थ में समझ सकें एवं उनकी वृत्तिक क्षमता का समुचित संवर्धन एवं विकास हो सके.
- सूचना तकनीकी के साथ साथ अन्य नयी तकनीकों की जानकारी लेकर उन्हें अपने कार्य का माध्यम बना सकें एवं समय समय पर उसे अद्यतन भी करते रहें.
- प्रभावी शिक्षण के लिए कला की विभिन्न विधाओं के महत्त्व की समझ विकसित हो सके एवं शिक्षक उन विधाओं का व्यावहारिक प्रयोग अपने शिक्षण में कर सकें.
- समाज के विभिन्न वर्गों से आने वाले छात्रों के सामाजिक-सांस्कृतिक-शैक्षिक-आर्थिक परिवेश के प्रति संवेदनशीलता विकसित हो एवं शिक्षक समावेशी शैक्षिक वातावरण का निर्माण कर सकें.
- छात्राध्यापक अपने परिवेश एवं समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझ सकें एवं उसी भावना का विकास अपने छात्रों में भी करने योग्य बन सकें.

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के शिक्षा विद्यापीठ के सभी शैक्षिकपाठ्यक्रमएवं पाठ्यचर्या "कोर" मॉडल('Core' Model)**पर आधारित हैं. इस "कोर" मॉडल**('Core' Model)**के निम्नलिखित घटक हैं:**

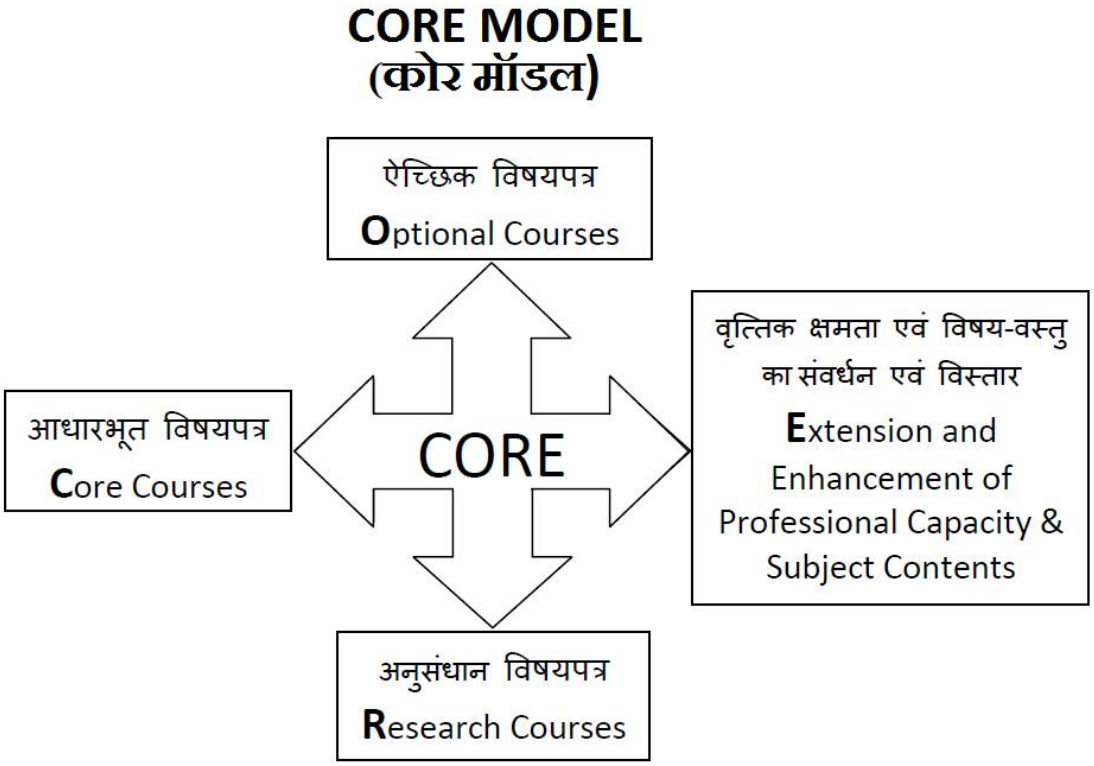

COREMODEL **(कोर मॉडल) आधारित विषयवार विवरण**

C	O		R	E
Core Courses **आधारभूत विषयपत्र**	**O**ptional Courses **ऐच्छिक विषयपत्र**		**R**esearch courses **अनुसंधान विषयपत्र**	**E**xtension and Enhancement of Professional Capacity & Subject Contents **वृत्तिक क्षमता एवं विषय-वस्तु का संवर्धन एवं विस्तार**
	Pedagogy of School Subject **विद्यालय विषय शिक्षण (कोई दो)**	Other Optional Courses **अन्य वैकल्पिक विषयपत्र(एक)**		
• **शिक्षा एवं शिक्षा के प्रयोजन** (Education & Its Purpose) • **शिक्षार्थी एवं उसका सन्दर्भ** (Learner and the Context) • **समकालीन भारत एवं शिक्षा** (Contemporary India and Education) • **संज्ञान, अधिगम एवं**	• **हिन्दी शिक्षण** • **अंग्रेजी शिक्षण** • **संस्कृत शिक्षण** • **मराठी शिक्षण** • **समाजविज्ञान शिक्षण** • **भौतिकीय विज्ञान शिक्षण** • **जीवविज्ञान**	• **निर्माणवादी ज्ञानमीमांसा एवं शिक्षणशास्त्र** Constructivist Epistemology & Pedagogy • **विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व** (School Management &	• **क्रियात्मक अनुसंधान** (Action Research)	• **साहित्य में शिक्षा** (Education in Literatures) • **पाठ्यचर्या और भाषा** (Language across Curriculum) • **शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी** (ICT in Education) • **शिक्षा में नाट्य एवं कला**

शिक्षण (Cognition, Learning & Teaching) • **शैक्षिक आकलन** (Educational Assessment) • **ज्ञान और पाठ्यचर्या** (Knowledge and Curriculum) • **गाँधी एवं शिक्षा** (Gandhi and Education)	**शिक्षण** • **गणित शिक्षण** • **वाणिज्य शिक्षण**	Leadership) • **शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श** (Educational Guidance & Counselling) • **एकात्म दर्शनएवंशिक्षा** (Integral philosophy & Education) • **मानवाधिकार एवं शांति शिक्षा** (Human Rights & Peace Education) • **आपदा प्रबंधन एवं शिक्षा** (Disaster Management & Education) • **योग शिक्षा** (Yoga Education)		(Drama and Art in Education) • **समावेशी समावेशी विद्यालयी शिक्षा** (Inclusive School Education) • **अध्यापक अस्मिता एवं आत्मबोध** (Teacher Identity & Understanding the Self) • **जेण्डर, विद्यालय और समाज** (Gender, School and Society) • **अन्य विभाग से कोई विषय** • **अन्य विभाग से कोई विषय** • **अन्य विभाग से कोई विषय** • **अन्य विभाग से कोई विषय**

दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम

प्रथम सेमेस्टर			द्वितीय सेमेस्टर		
कोर्स कोड	**विषय**	**पूर्णांक / क्रेडिट**	**कोर्स कोड**	**विषय**	**पूर्णांक / क्रेडिट**
शिक्षा 001	**शिक्षा एवं शिक्षा के प्रयोजन** (Education & Its Purpose)	**100 / 4**	**शिक्षा 005**	**संज्ञान, अधिगम एवं शिक्षण** (Cognition, Learning & Teaching)	**100 / 4**
शिक्षा 002	**शिक्षार्थी एवं उसका सन्दर्भ** (Learner and the Context)	**100 / 4**	**शिक्षा 006**	**शैक्षिक आकलन** (Educational Assessment)	**50 / 2**
शिक्षा 003	**समकालीन भारत एवं शिक्षा** (Contemporary India and Education)	**100 / 4**	**शिक्षा 007-1**	**विद्यालय विषय शिक्षण -1अ** (Pedagogy of a School Subject – 1a)	**50 / 2**
शिक्षा 004	**अनुशासन एवं विषय अवबोधन** (Understanding Disciplines and Subjects)**(आन्तरिक मूल्यांकन)**	**50 / 2**	**शिक्षा 007-2**	**विद्यालय विषय शिक्षण -2अ** (Pedagogy of a School Subject – 2a)	**50 / 2**
वृ.क्ष. 001	**पाठ्यचर्या और भाषा** (Language across Curriculum) **(आन्तरिक मूल्यांकन)**	**50 / 2**	**वि.अ.1**	**विद्यालय संपर्क कार्यक्रम (एक माह)** (School Contact Programme)	**100 / 4**
वृ.क्ष. 002	**शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी(अन्य विभाग से)**	**50 / 2**	**वृ.क्ष. 004**	**विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व (अन्य विभाग से)** (School	**50 / 2**

	(ICT in Education) (From Other Department)			Management & Leadership)(From Other Department)	
वृ.क्ष. 003	**अन्य विभाग से कोई विषय** (Any one Subject from Other Department)	**50 / 2**	**वृ.क्ष. 005**	**शिक्षा में नाट्य एवं कला (अन्य विभाग से)** (Drama and Art in Education) (From Other Department)	**50 / 2**
			वृ.क्ष. 006	**अन्य विभाग से कोई विषय** (Any Subject from Other Department)	**50 / 2**
	कुल अंक / क्रेडिट	**500 / 20**		**कुल अंक / क्रेडिट**	**500 / 20**

तृतीय सेमेस्टर			**चतुर्थ सेमेस्टर**		
कोर्स कोड	**विषय**	**पूर्णांक / क्रेडिट**	**कोर्स कोड**	**विषय**	**पूर्णांक / क्रेडिट**
शिक्षा 007-1	**विद्यालय विषय शिक्षण - 1ब** (Pedagogy of a School Subject – **1b**)	**50 / 2**	**शिक्षा 008**	**ज्ञान और पाठ्यचर्या** (Knowledge and Curriculum)	**100 / 4**
शिक्षा 007-2	**विद्यालय विषय शिक्षण - 2ब** (Pedagogy of a School Subject – **2**b)	**50 / 2**	**शिक्षा 009**	**ऐच्छिक विषय***** (Optional Courses)	**100 / 4**
वि.अ.2	**विद्यालय अनुभव कार्यक्रम (चार माह)**(School Internship-**4**Months)	**400 / 16**	**शिक्षा 010**	**गाँधी एवं शिक्षा** (Gandhi and Education)	**50 / 2**
			वृ.क्ष. 007	**साहित्य में शिक्षा** (Education in Literatures)	**50 / 2**
			वृ.क्ष. 008	**समावेशी विद्यालयी शिक्षा** (Inclusive School Education)	**50 / 2**
			वृ.क्ष. 009	**अस्मिता एवं आत्मबोध** (Identity & Understanding the Self) **(From Other Dept.)**	**50 / 2**
			वृ.क्ष. 010	**जेण्डर विमर्श और शिक्षा / जेण्डर, विद्यालयएवंसमाज**(Gender, School and Society)**(Other Dept)**	**50 / 2**
			वृ.क्ष. 011	**अन्य विभाग से कोई एक विषय (Any Subject from Other Department)**	**50 / 2**
	कुल अंक / क्रेडिट	**500 / 20**		**कुल अंक / क्रेडिट**	**500 / 20**

नोट: वृ.क्ष.: वृत्तिक क्षमता, वि.अ.: विद्यालय अनुभव

कोर्स कोड	***ऐच्छिक विषय	**पूर्णांक / क्रेडिट**	**कोर्स कोड**	***ऐच्छिक विषय	**पूर्णांक / क्रेडिट**

	Optional Courses			Optional Courses	
शिक्षा 009-1	**निर्माणवादी ज्ञानमीमांसा एवं शिक्षणशास्त्र** Constructivist Epistemology & Pedagogy	**100 / 4**	**009-4**	**आपदा प्रबंधन एवं शिक्षा** (Disaster Management & Education)	**100 / 4**
009-2	**शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श** (Educational Guidance & Counselling)	**100 / 4**	**009-5**	**योग शिक्षा** (Yoga Education)	**100 / 4**
009-3	**मानवाधिकार एवं शांति शिक्षा** (Human Rights & Peace Education)	**100 / 4**	**009-6**	**एकात्म दर्शनएवंशिक्षा** (Integral philosophy & Education)	**100 / 4**

विद्यालय संपर्क कार्यक्रम (एक माह) - 4 क्रेडिट

1	**विद्यालय दैनिकी**	**1 क्रेडिट**
2	**कक्षा अवलोकन**	**1 क्रेडिट**
3	**केस स्टडी**	**1 क्रेडिट**
4	**विद्यालय अवलोकन एवं सीखने की योजना**	**1 क्रेडिट**
	कुल	**4 क्रेडिट**

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम (चार माह) - 16 क्रेडिट

1	**शिक्षण, अधिगम एवं आकलन** (Teaching, Learning & Assessment)	02 **क्रेडिट**
2	**उपलब्धि परीक्षण रिपोर्ट (**Achievement Test Report)	02 **क्रेडिट**
3	Case Study (Any 02 – School Programme & Child)	02 **क्रेडिट**
4	**क्रियात्मक अनुसंधान** (Action Research)	02 **क्रेडिट**
5	**सामुहिक प्रस्तुति**(Group Presentation)	02 **क्रेडिट**
6	**परियोजना (क्रियात्मक अनुसंधान के अतिरिक्त, जैसे कि एक्टिविटी कैलेंडर, स्टुडेंट्स प्रोफाईल, यूनिट टेस्ट, क्लास टेस्ट,समय-सारणी की समीक्षा, आदि)** (Project - Other than Action Research. i.e. Time Table, Activity Calendar, Students Profile, Unit Test, Class Test)	02 **क्रेडिट**
7	**विचारात्मक दैनन्दिनी** Reflective Journal	02 **क्रेडिट**
8	**समुदाय के साथ अंतर्क्रिया (रिपोर्ट)**	02 **क्रेडिट**

	[Interaction with Community (Report)]	
	कुल	**16 क्रेडिट**

टिप्पणी

- **बी.एड. पाठ्यक्रम कुल 80 क्रेडिट का होगा एवं इसकी अवधि चार सेमेस्टर (दो वर्ष) की होगी.**
- **प्रत्येक सेमेस्टर 20 क्रेडिट का होगा.**
- **कुल 80 क्रेडिट के विषयपत्रों में से 64 क्रेडिट के विषयपत्र (Courses) शिक्षा विभाग द्वारा पढाए जाएंगे तथा शेष 16 क्रेडिट के कुल 8 विषयपत्र (Courses) विश्वविद्यालय के अन्य विभागों द्वारा पढाए जाएंगे जिन्हें छात्र अपनी रूचि के अनुसार चुन सकेंगे.**

मूल्यांकन विधि

बी.एड. पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों के लिए मूल्यांकन विधि निम्नलिखित रूप से होगी:

सेमेस्टर - 1				
क्र. सं	**कोर्स कोड**	**कोर्स / विषय का नाम**	**पूर्णांक / क्रेडिट**	**मूल्यांकन विधि**
1	**शिक्षा 001**	**शिक्षा एवं शिक्षा के प्रयोजन** (Education & Its Purpose)	**100 / 4**	**सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन**
2	**शिक्षा 002**	**शिक्षार्थी एवं उसका सन्दर्भ** (Learner and the Context)	**100 / 4**	**सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन**
3	**शिक्षा 003**	**समकालीन भारत एवं शिक्षा** (Contemporary India and Education)	**100 / 4**	**सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन**
4	**शिक्षा 004**	**अनुशासन एवं विषय अवबोधन** (Understanding Disciplines and Subjects)	**50 / 2**	**आन्तरिक मूल्यांकन**
5	**वृ.क्ष. 001**	**पाठ्यचर्या और भाषा** (Language across Curriculum) **(आन्तरिक मूल्यांकन)**	**50 / 2**	**आन्तरिक मूल्यांकन**
6	**वृ.क्ष. 002**	**शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी(अन्य विभाग से)**(ICT in Education) (From Other Department)	**50 / 2**	**सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन**
7	**वृ.क्ष. 003**	**अन्य विभाग से कोई विषय** (Any one Subject from Other Department)	**50 / 2**	

सेमेस्टर -2				
क्र. सं	कोर्स कोड	कोर्स / विषय का नाम	पूर्णांक / क्रेडिट	मूल्यांकन विधि
1	शिक्षा 006	संज्ञान, अधिगम एवं शिक्षण (Cognition, Learning & Teaching)	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन
2	शिक्षा 007	शैक्षिक आकलन (Educational Assessment)	50 / 2	सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन
3	शिक्षा 008-1	विद्यालय विषय शिक्षण -1अ (Pedagogy of a School Subject – 1a)	50 / 2	सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन
4	शिक्षा 008-2	विद्यालय विषय शिक्षण -2अ (Pedagogy of a School Subject – 2a)	50 / 2	सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन
5	वि.अ.1	विद्यालय संपर्क कार्यक्रम (एक माह) (School Contact Programme)	100 / 4	आन्तरिक मूल्यांकन
6	वृ.क्ष. 004	विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व (अन्य विभाग से) (School Management & Leadership)(From Other Department)	50 / 2	सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन
7	वृ.क्ष. 005	शिक्षा में नाट्य एवं कला (अन्य विभाग से) (Drama and Art in Education) (From Other Department)	50 / 2	आन्तरिक मूल्यांकन
8	वृ.क्ष. 006	अन्य विभाग से कोई विषय (Any Subject from Other Department)	50 / 2	आन्तरिक मूल्यांकन

सेमेस्टर -3				
क्र. सं	कोर्स कोड	कोर्स / विषय का नाम	पूर्णांक / क्रेडिट	मूल्यांकन विधि
1	शिक्षा 008-1	विद्यालय विषय शिक्षण - 1ब (Pedagogy of a School Subject – **1b**)	50 / 2	सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन
2	शिक्षा 008-2	विद्यालय विषय शिक्षण - 2ब (Pedagogy of a School Subject – **2**b)	50 / 2	सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन
3	वि.अ.2	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम (चार माह)(School Internship-**4**Months)	400 / 16	आन्तरिक मूल्यांकन

सेमेस्टर -4				
क्र. सं	कोर्स कोड	कोर्स / विषय का नाम	पूर्णांक / क्रेडिट	मूल्यांकन विधि
1	शिक्षा 009	ज्ञान और पाठ्यचर्या (Knowledge and Curriculum)	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन
2	शिक्षा 010	ऐच्छिक विषय*** (Optional Courses)	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन
3	शिक्षा 011	गाँधी एवं शिक्षा (Gandhi and Education)	50 / 2	सत्रांत मूल्यांकन + आन्तरिक मूल्यांकन
4	वृ.क्ष.	साहित्य में शिक्षा	50 / 2	आन्तरिक मूल्यांकन

	007	(Education in Literatures)		
5	वृ.क्ष. 008	समावेशी विद्यालयी शिक्षा (Inclusive School Education)	50 / 2	आन्तरिक मूल्यांकन
6	वृ.क्ष. 009	अस्मिता एवं आत्मबोध (Identity & Understanding the Self) **(From Other Dept.)**	50 / 2	आन्तरिक मूल्यांकन
7	वृ.क्ष. 010	जेण्डर, विद्यालयएवंसमाज(Gender, School and Society)**(Other Dept)**	50 / 2	आन्तरिक मूल्यांकन
8	वृ.क्ष. 011	अन्य विभाग से कोई एक विषय **(Any Subject from Other Department)**	50 / 2	आन्तरिक मूल्यांकन

पाठ्यक्रम की सेमेस्टरवार विवेचना

प्रथम सेमेस्टर

शिक्षा 001:शिक्षा एवं शिक्षा के प्रयोजन

उद्देश्यः इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्राध्यापकों को शिक्षा के बुनियादी विचारों औरअवधारणाओं से परिचित कराना है। इसके द्वारा वे विभिन्न सैद्धान्तिक एवं दार्शनिकपरम्पराओं में व्यक्त शिक्षा, ज्ञान और सीखने की मान्यताओं का परीक्षण कर सकेगें। इसकेअतिरिक्त वे शिक्षा की प्रक्रिया में मूल्यों की भूमिका का भी आलोचनात्मक विश्लेषण करसकेगें।

इकाई1:शिक्षा की अवधारणा: अर्थ, प्रक्रिया, स्वरूप और उद्देश्य, आधारभूत अवधारणाएँ;सीखना, शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुदेशन, खोज, सूचना, आगमन व निगमन, अनुभव, अन्वेषण और संवाद।

इकाई 2: **पाश्चात्य विचारकों का योगदानः प्लेटो, अरस्तू, फ्रोबेल,मारिया माण्टेसरी, रूसो, ड्यूई, पालो फ्रेरे, देकार्ते, स्पिनोजा, इमेनुएल कांट।**

इकाई 3: **शिक्षा विषयक भारतीय विचारः कुछ प्रमुख भारतीय शिक्षा विचारकों कायोगदानः महात्मा गाँधी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द, जिद्दूकृष्णमूर्ति, श्री अरबिन्द, गिजु भाई; न्याय, सांख्य, योग, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदांत दर्शन के अनुसार शिक्षा, बौद्ध एवं जैन धर्म के अनुसार शिक्षा.**

इकाई 4: **शिक्षा और मूल्यः मूल्यों की प्रकृति और स्त्रोत, समकालीन समाज में मूल्य,मूल्यों के लिए शिक्षा की प्रासंगिकता, विद्यालय के सन्दर्भ में मूल्य कानिर्माण, मूल्यों के विकास और पोषण के संदर्भ में शिक्षक की भूमिका,सामाजिक संघर्ष की चुनौतियों और शांति स्थापना**

शिक्षा 002:शिक्षार्थी एवं उसका सन्दर्भ

उद्देश्यः इसका उद्देश्य मानव विकास की प्रक्रिया और प्रश्नों से परिचित कराना है। इसकेद्वारा विद्यार्थी संज्ञानात्मक सामाजिक व नैतिक विकास के सैद्धान्तिक समझ को विकसितकरेगें। इसके आलोक में भारतीय संदर्भो में बाल्यावस्था और किशोरवस्था की बहुतला कोसमझ सकेगें।

इकाई 1: **मानव विकासः अवधारणाएँ और इनसे (विकास वृद्धि और परिपक्वता-जैसे)जुड़ी बहसें। विकास एक प्रक्रिया के रूप में: बहुआयामी, सतव व असततजीवन पर्यन्त; विकास को प्रभावित करने वाले सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ**

इकाई 2: संज्ञानात्मक विकासः पियाजे का सिद्धान्तः संज्ञानात्मक संरचनाएँ औरप्रक्रियाएँ, विकास की अवस्थाएँ; वायगात्स्की का सिद्धान्तः संज्ञान केसामाजिक स्त्रोत, सांस्कृतिक उपकरण और विकास, भाषा की भूमिका,सीखना और विकास

इकाई 3: सामाजिक और नैतिक विकासः स्व और पहचान का विकास, स्वधारणा औरआत्म सम्मान विकास; स्व और अन्य परिवार, हमउम्र साथी और दोस्त;स्वऔर भावना; इरिक्सन और कोहलबर्ग का सिद्धांत और इनके निहितार्थ।

इकाई 4: भारतीय समाज में बड़ा होनाः बाल्यावस्था और किशोरावस्था के दौरानविकास की प्रक्रिया; भारतीय संदर्भ में बाल्यावस्था और किशोरावस्था से जुड़ेविमर्श।

शिक्षा 003: समकालीन भारत एवं शिक्षा

यह पाठ्यक्रम भारत की शैक्षिक व्यवस्थाके सन्दर्भ में विद्यालयी शिक्षा के विकास केऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से परिचित कराता है। यह अन्य स्तरों से विद्यालयी शिक्षा के सम्बन्धऔर इसके संगठनात्मक ढाँचे के बारे में भी बताता है। इसके साथ शिक्षा में गुणवत्ता केबहस से भी संलग्न करता है।

इकाई 1: आधुनिक शिक्षा का विकासः भारतीय शिक्षा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य- वैदिक कालीन, बौद्ध कालीन, तथा मध्ययुगीन शिक्षा;वर्ष 1800 से 1947 के दौरान हुए प्रयासों काविहंगमावलोकन, स्वतंत्र भारत में गठित विभिन्न आयोगों और समितियों कीसंस्तुतियों का अध्ययन, इनका क्रियाकरण और वर्तमान शिक्षा के विकास मेंउनकी भूमिका

इकाई 2: सांगठनिक और प्रशासनिक संरचनाः पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक,उच्चशिक्षा के स्तर पर। शिक्षा से जुड़े प्रशासनिक अभिकरणः एम.एच.आर.डी.,सी.बी.एस.ई., एन.सी.ई.आर.टी., एस.सी.ई.आर.टी., डायट, बी.आर.सी., सी.आर.सी., आदि.

इकाई 3: विद्यालय संगठन व प्रबन्धः प्रबन्ध समिति व इसके कार्य, विद्यालय प्रशासन;समुदाय की सहभागिता, विद्यालय बजट, भौतिक संसाधन, पाठ्यचर्या का नियोजन,पाठ्यसहगामीः विद्यालय अनुशासन ; समय सारणी;विद्यालय सुरक्षा; स्वास्थ्य शिक्षा; मध्याहन भोजन व अन्य योजनाएँ

इकाई 4: समकालीन विमर्शः शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षा के अधिकार कानून 2009 केबाद आए बदलाव; महिलाओं, आदिवासियों एवं हाशिए के समुदाय से जुड़ेलोगों की शिक्षा, प्रगतिशील विद्यालयों जैसे राजघाट स्कूल, ओरोविलो,आनन्द निकेतन

शिक्षा 004: अनुशासन एवं विषय अवबोधन

इसके द्वारा छात्राध्यापक विद्यालय में पढाए जाने वाले विभिन्न विषयों पर विमर्श और चिंतन करेंगे. वे विभिन्न ज्ञानानुशासन की प्रकृति एवं विद्यालय पाठ्यचर्या के विषयों की भूमिका के बारे जान सकेंगे एवं मानव जीवन में उनके महत्त्व को समझ पाएँगे.

इकाई 1: विद्यालय विषयों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि,प्रकृति, शैक्षिक व्यवस्था में उन विषयों का योगदान, समाज एवं मानव विकास की प्रक्रिया में इन विषयों की भूमिका एवं महत्व.

इकाई 2: विद्यालयी विषय वस्तु का निर्माण एवं पाठ्यक्रम में चयन, सैद्धांतिक पक्ष, व्यावहारिक पक्ष, मानव जीवन में विद्यालयी विषय का महत्व

इकाई 3: सीखने-सिखाने के दृष्टिकोण से विद्यालयी विषय की प्रकृति,छात्रों के ज्ञान-निर्माण की प्रक्रिया में संबंधित विषयों का योगदान. मेंटरिंग, टयूटोरियल, विचार-विमर्श, पाठ्य-पुस्तक विश्लेषण, विषयवार पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजन, एवं एकल तथा सामूहिक प्रस्तुति.

वृ.क्ष. 001: पाठ्यचर्या और भाषा

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्राध्यापकों में शिक्षण-अधिगम के दौरान विषयगत ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया में भाषा के महत्त्व के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना है.

इकाई 1: अध्ययन एवं अध्यापन में भाषा का महत्त्व, भाषा एवं बोली, मातृभाषा एवं विद्यालय की भाषा, कक्षा में भाषाई विविधता, छात्रों की भाषाई पृष्ठभूमि, घर, समुदाय, परिवेश में एवं विद्यालय में प्रयुक्त होने वाली भाषा के बीच अंतर्संबंध एवं अंतर्द्वंद्व, बहुभाषावाद, डिफिसिट थ्योरी, डिसकन्टिन्युईटी थ्योरी

इकाई 2: कक्शागत संवाद एवं वार्तालाप की प्रकृति, विषय शिक्षण में भाषा का महत्त्व, कक्षा में प्रयुक्त मौखिक भाषा, शिक्षण-अधिगम के माध्यम रूप में कक्षागत विचार-विमर्श और भाषा, प्रश्नों की प्रकृति एवं भाषा

इकाई 3: विषयवस्तु और भाषा: विभिन्न विद्यालयी विषय में पठान एवं अवबोधन तथा भाषा की भूमिका, एक्स्पोजिटरी टेक्स्ट बनाम नैरेटिव टेक्स्ट की प्रकृति, ट्रांजेक्शनल टेक्स्ट बनाम रिफ्लेक्टिव टेक्स्ट, स्कीमा थ्योरी, टेक्स्ट संरचना, पाठ्यसामग्री विश्लेषण, पढने की रणनीति - नोट लिखना, संक्षेप में लिखना, पढने व लिखने में संबंध, लिखने की प्रक्रिया एवं गति, बच्चों की लेखन शैली एवं उनकी अवधारणाओं में संबंध, लेखन के उद्देश्य की समझ, सीखने एवं समझने के लिए लेखन

वृ.क्ष.002: शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी

उद्देश्यः इसके द्वारा छात्राध्यापकों को सूचना एवं संचार तकनीकी की बुनियादीकुशलताओं से परिचित कराया जाएग। इस पाठ्क्रम को जोर होगा कि वे इन कुशलताओंका उपयोग सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को समृद्ध और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए करें.

इकाई 1: परिचयः शिक्षा के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी की आवश्यकता औरमहत्व, सूचना एवं संचार तकनीकी के विविध साधन और उनके उपयोग केसम्भाव्यक्षेत्र, ज्ञान निर्माण में आईकी भूमिका .टी .सी .

इकाई 2: अभिक्रमित अनुदेशनः सिद्धान्त, विशेषताएँ और प्रकार (रैखिक और शाखित),अभिक्रमित अनुदेशन का विकासः तैयारी, लेखन, परीक्षण और मूल्यांकन,संगणक सहायक अधिगम और सीखनेसीखाने की प्रक्रिया-

इकाई 3: संगणक का प्रयोगः संगणक और उससे जुड़े यंत्रों के प्रयोग का कार्यात्मकज्ञान, कुछ प्रमुख साफ्टवेयरों के प्रयोग, इनके प्रयोग के आधार पर शिक्षकसहायक सामग्रियों का निर्माण, कम्प्यूटर सहायक सीखना

इकाई 4: आई.सी .टी . का बहुआयामी प्रयोगः सीखनेंसिखानेमें, वृत्तिक विकास में,विद्यालयी प्रबन्धन में; ई-लर्निंग / वर्चुअल लर्निंग, ई-रिसोर्सेज,स्मार्ट क्लासरूम,मल्टीमीडिया पैकेज; इण्टरनेट का प्रयोग, भाषा प्रयोगशाला, नैतिक सरोकार, कुछ प्रमुख आई सी टी आधारित शैक्षिक कार्यक्रम

द्वितीय सेमेस्टर

शिक्षा005:संज्ञान, अधिगम एवं शिक्षण

उद्देश्यः इसके द्वारा विद्यार्थी संज्ञान और सीखने के विभिन्न सिद्धांतों को जान सकेगें। वेइनके आधार पर सीखनेसिखाने के निर्माणवादी शिक्षाशास्त्रीय युक्तियों का विकास कर-सकेगें। वे विद्यार्थियों में विविधता की प्रकृति की प्रशंसा कर सकेगें।

इकाई 1: सीखनाः अवधारणा और उपागमः सीखने की प्रक्रिया को निम्नलिखितउपागमों के सन्दर्भ समझनाः व्यवहारवाद, संज्ञानवाद, सूचना प्रसंस्करणसिद्धान्त, गेस्टाल्ट, सामाजिक निर्माणवाद

इकाई 2: सीखने का निर्माणवादी परिप्रेक्ष्यः वैयक्तिक निर्माणवाद और सामाजिकनिर्माणवाद का विस्तृत अध्ययन; बुद्धिः अवधारणा, मापन से जुड़े प्रश्न;बहु बुद्धि सिद्धान्त सीखने के तरीके, स्मृतिः प्रकृति, प्रकार; सांवेगिक,अल्पकालिक तथा दीर्घकालीक स्मृति, कार्यात्मक स्मृति (वर्किंग मेमोरी),विस्मरण के कारण, स्मृमि बढ़ाने की युक्तियाँ

इकाई 3: प्रेरणाः प्रेरणा की प्रकृति और प्रकार, आन्तरिक और बाहय प्रेरणा; प्रेरणा केउपागमः व्यवहारवादी, माननतावादी, संज्ञानवादी और सामाजिक सांस्कृतिक;रचनाशीलता का पोषण और समस्या समाधान कौशलों का विकास;

इकाई 4: मानव विविधताः विद्यार्थियों में वैयाक्तिक भिन्नता, विविधता का सम्मान औरपोषण, विभिन्न प्रकार की विविधता का समावेशनः विशिष्ट आवश्यकता वालेविद्यार्थी, प्रतिभाशाली और रचनाशील विद्यार्थी, सामाजिक दृष्टि से अपवंचितःस्ट्रीट चिल्ड्रेन, बाल श्रमिक, भावनात्मक दृष्टि से अस्थिर; इन सभी प्रकार केविद्यार्थियों से जुड़े प्रश्ने, विशिष्ट आवश्यकताएँ और शिक्षा

शिक्षा 006: शैक्षिक आकलन

उद्देश्यः इसके द्वारा छात्राध्यापक मूल्यांकन व आकलन के परिप्रेक्ष्य को समझ सकेगें। वेइनकी प्रक्रिया, उपकरण और तरीकों को जान सकेगें। वे मूल्यांकन और आकलन केसमकालीन प्रक्रियाओं जैसे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की समझ विकसित कर सकेगें।

इकाई 1: परिप्रेक्ष्यः आकलन व मूल्यांकन का व्यवहारवादी प्रारूप बनाम निर्माणवादीप्रारूप, सीखने का आकलन और सीखने के लिए आकलन में विभेद,प्रचलित मूल्यांकन व आकलन प्रक्रिया का आलोचनात्मक विश्लेषण

इकाई 2: मुख्य अवधारणाएँमापन परीक्षण मूल्यांकन आकलनः, सतत् व व्यापकमूल्यांकन; आकलन के उद्देश्य, ब्लूम टैक्सोनामी का आलोचनात्मक अध्ययन

इकाई :3 आकलन परीक्षणों का निर्माणः आकलन के निकष , आकलन के उपकरणःवस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न, निबन्धात्मक प्रश्न, अवलोकन, रेटिंग स्केल,पोर्टफोलियो एवं मूल्यांकन, समूहसाथी मूल्यांकन-, आकलन हेतु कार्यःप्रोजेक्ट, प्रदत्त कार्य, प्रदर्शन आदि; सी.बी.एस.ई. द्वारा प्रस्तावित सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विधि का अध्ययन

इकाई 4: प्रदत्त विश्लेषण और प्रतिपुष्टिः बुनियादी सांख्यिकीय, केन्द्रियप्रवृत्तियोंऔर विचलनशीलता का मापन, ग्राफीय निरूपण, सामान्य प्रायिकता वक्र,सहसम्बन्ध, प्रतिशतांक और प्रतिशतांक क्रमः प्रतिपुष्टि देने के तरीके,प्रतिपुष्टि के आधार पर शिक्षण शास्त्रीय निर्णय

शिक्षा 007: विषय शिक्षण

इसके अन्तर्गत छात्राध्यापकों को स्नातक स्तर पर पढ़े गए विषयों के आधार पर दो विषयोंका चुनाव करना होगा। इस पाठ्यक्रम के द्वारा उन्हें विषय आधारित ज्ञान तथा शिक्षणशास्त्रीय युक्तियों दोनों से परिचित

कराया जाएगा। इसके पठनपाठन के लिए गोष्ठियों-और कार्यशालाओं, विषय आधारित क्लब एवं अन्य पाठ्यसहगामी क्रियाकलाप की मदद ली जाएगी। सत्रीय कार्यों के साक्षात अनुभव के द्वारा शिक्षण शास्त्रीय युक्तियों की समझ के विकास का प्रयास कियाजाएगा। छात्राध्यापक भाषा शिक्षण के विभिन्न उपागमों को जान सकेगें। वे भाषा के महत्वसे परिचित होगें

हिन्दी शिक्षण

उद्देश्यः छात्राध्यापक भाषा के महत्व से परिचित होगें। वे भाषा शिक्षण के विभिन्न उपागमोंको जान सकेगें। भाषा के विभिन्न रूपों को सीखनेसिखाने की शिक्षाशास्त्रीय कुशलताओं-का विकास करेगें।

इकाईः 1 भाषा की भूमिकाः समाज में भाषाः भाषा और लिंग, भाषा और अस्मिता,भाषा और घर की भाषा, बच्चे की भाषा, स्कूल की भाषा, समूचे पाठ्यक्रम मेंभाषा; संविधान और शिक्षा समितियों की रिपोर्ट में भाषा, त्रिभाषा सूत्र;मातृभाषा, राज भाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी,वर्तमान विद्यालयीपाठ्यचर्या में हिन्दी का स्थान; हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यप्रथम भाषा के रूप -में, अन्य भाषा के रूप में, भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त

इकाईः 2 भाषा शिक्षणः भाषा अर्जन और अधिगम का दार्शनिक, सामाजिक औरमनोवैज्ञानिक आधार, समग्र भाषा दृष्टि, रचनात्मक दृष्टि, बहुभाषिक दृष्टिःप्रचलित विधियाँ: व्याकरण अनुवाद प्रणाली, प्रत्यक्ष प्रणाली, ढाँचागत प्रणाली,संप्रेषणात्मक प्रणाली;भारत का बहुभाषिक परिदृश्यःभारत में भाषाएँ एवं :भाषा परिवार-, बहुभाषिकता के आयामबौद्धिक आयाम :, शिक्षणशास्त्रीयआयाम; बहुभाषिक सन्दर्भ में हिन्दी शिक्षण की भूमिका

इकाईः 3 भाषा कौशलः भाषा कौशलोश्रवण कौशल, मौखिक अभिव्यक्ति, पठनकौशल, लेखन कौशल का महत्त्व, शिक्षण उद्देश्य, कौशल विकासक क्रियाएँएवं शिक्षण विधि, और मूल्यांकन

इकाईः 3 हिन्दी पाठ्यक्रम तथा पुस्तकें: माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर परनिर्धारित हिन्दी पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक अध्ययन, पाठ्य पुस्तकों तथापूरक पुस्तकों का महत्व व विशेषताएँ, पाठ्यपुस्तक समीक्षा एवं पाठ्यपुस्तकोंका तुलनात्मक विश्लेषण; पाठ्यसहगामी क्रियाएँहिन्दी शिक्षण में महत्व -,स्वरूप, भाषा कौशलों के विकास में योगदान; हिन्दी शिक्षणमाध्यम की भूमिका

इकाईः 4 विभिन्न साहित्यिक विधाओं का शिक्षणः कविता शिक्षणः भाव पक्ष एवं कलापक्ष, शिक्षण विधि, गद्य शिक्षणः गद्य विधाओं के रूप व उनकी शिक्षणविधियाँ, गहन अध्ययननिष्ठपाठ और विस्तृत अध्ययननिष्ठपाठ का शिक्षण औरउनके शिक्षण विधियों मे अन्तर; हिन्दी साहित्य के इतिहास का शिक्षणहिन्दी -साहित्य के इतिहास के प्रमुख विमर्श, हिन्दी साहित्य के इतिहास का शिक्षणमहत्व व उद्देश्य, रचनाओं के शिक्षण में हिन्दी साहित्य के इतिहास से संगति;व्याकरण शिक्षण की विधियाँ

इकाईः 5 हिन्दी भाषा शिक्षण में तकनीकी का उपयोगकम्प्यूटर सहायक सामग्री का -विकास, सूचना प्रौद्यौगी का भाषा कौशलों के विकास में उपयोग, हिन्दी कक्षाशिक्षण में मीडिया की भूमिका; मंचनकला व कहानी कौशल की हिन्दी भाषाशिक्षण में उपादेयता; विद्यालय पत्रिकाः हिन्दी के अध्यापक और विद्यार्थी कीरचनात्मकता

इकाईः 6: मूल्यांकन व आकलनः विभिन्न उपकरण और उनकी विशेषताएँ, रचनात्मकव योगात्मक मूल्यांकन के विभिन्न तरीके; आकलन प्रपत्र का निर्माण,कार्यकरण और प्रतिवेदन, प्रदत्त कार्य, प्रश्नोत्तरी, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण,रचनात्मक अभिव्यक्ति, समूह गतिविधि आदि के आकलन के तरीकेमें जनसंचार

सामाजिक विज्ञान शिक्षण

उद्देश्यः इसके द्वारा छात्राध्यापक अनुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान (नागरिक शास्त्र, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र) की प्रकृति कोसमझ सकेंगे। वे विषयगत ज्ञान को संमृद्ध कर सकेगें। वे सामाजिक विज्ञान कोसीखने - सिखाने की समझ का विकास कर सकेंगे।

इकाई 1: परिचयः ज्ञानानुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान केदार्शनिक व सैद्धान्तिक आधार, सामाजिक विज्ञान विद्यालयी विषय के रूप मेंविकास व प्रवृत्तियाँ; सामाजिक विज्ञान का अन्य विषयोंसे सम्बन्ध।

इकाई 2: विषय ज्ञान की समृद्धिः इसके अन्तर्गत माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिकस्तर के पाठ्यक्रम पर आधारित विषयगत ज्ञान को केन्द्र में रखकर परिप्रेक्ष्यका विकास किया जाएगा। यह कार्य गोष्ठियों और कार्यशालाओं के माध्यमसे किया जाएगा।

इकाई 3:सामाजिक विज्ञान शिक्षणःलक्ष्य व उद्देश्य, माध्यमिक और उच्चतरमाध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम व पुस्तकें, सामाजिकविज्ञान के पाठ्यक्रम विकास के उपागम; सामाजिक विज्ञान के पाठ्यपुस्तकोंका आलोचनात्मक अध्ययन; लोकतंत्र, नागरिकता, और मानवाधिकार केविमर्श और सामाजिक विज्ञान शिक्षक के लिए निहितार्थ

इकाई 4: सीखना सिखानाः-सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियाँ: पाठ्यपुस्तक विधि,व्याख्यान विधि, कहानी विधि, नाट्य रूपान्तरण, तुलनात्मक आदि;सामाजिकविज्ञान शिक्षण में समसामयिक राजनैतिक घटनाओं का प्रयोग; पाठ्यसहगामीगतिविधियाँ: क्षेत्र भ्रमण, फिल्म स्क्रीनिंग, सर्वेक्षण आदि(इस इकाई को भी सत्रीय कार्य के अंग के रूप में साक्षात अनुभव के माध्यम सेकराया जाएगा।(

इकाई 5: आकलनः सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया तद्नुरूप शैक्षिक औरसहशैक्षिक आकलन के तरीके और उपकरणों का विकास; शिक्षक निर्मितउपलब्धि परीक्षण का विकास, विद्यार्थियों पर वितरण और रिपोर्टिंग; प्रदत्तकार्य, प्रश्नोत्तरी, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, रचनात्मक अभिव्यक्ति, समूहगतिविधि आदि के आकलन के तरीके

भौतिकीय विज्ञान शिक्षण

उद्देश्यः इसके द्वारा छात्राध्यापक अनुशासन के रूप में भौतिकीय विज्ञान की प्रकृति कोसमझ सकेंगे। वे भौतिकीय विज्ञान के विषयगत ज्ञान को समृद्ध कर सकेगें। वे भौतिकीयविज्ञान को सीखने सिखाने की समझ का विकास कर सकेंगे

इकाई 1: परिचयः विज्ञान की प्रकृति, विज्ञान की विधि, भौतिकीय विज्ञान के विशेषसंदर्भ में, एक अनुशासन के रूप में भौतिकीय विज्ञान का विकास औरसमकालीन प्रवृत्तियाँ एवं विमर्श, भौतिकीय विज्ञान, समाज और प्रौद्यौगिकी मेंअन्तःक्षेपण, भौतिकीय विज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध

इकाई 2: विषय ज्ञान की समृद्धिः इसके अन्तर्गत माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिकस्तर के पाठ्यक्रम पर आधारित विषयगत ज्ञान को केन्द्र में रखकर परिप्रेक्ष्यका विकास किया जाएगा। यह कार्य गोष्ठियों और कार्यशालाओं, विज्ञान क्लब आदि के माध्यमसे किया जाएगा।

इकाई 3: भौतिक विज्ञान शिक्षणः विद्यालय स्तर पर विज्ञान के सीखनेसिखाने के -लक्ष्य एवं उद्देश्य, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की भूमिका में विज्ञान शिक्षण का स्थान,प्रचलित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन; नवाचारआधारित पाठ्यक्रम- जैसे होशंगाबाद विज्ञानं शिक्षण कार्यक्रम आदि, विज्ञानके प्रचार में स्वंय सेवी संगठनों की भूमिका; भौतिक विज्ञान शिक्षण के सन्दर्भमें निर्माणवाद की व्याख्या और निहितार्थ

इकाई 4: सीखनासिखानाः वैज्ञानिक घटनाओं के प्रति बच्चों की समझ-, बच्चों कीवैकल्पिक अवधारणाएँ और इसके शिक्षाशास्त्रीय निहितार्थ, विज्ञान केसीखनेसिखाने में प्रेक्षण-, प्रयोग, खोज और अन्तः प्रज्ञा की (सूझ) भूमिका;शिक्षण शास्त्रीय युक्तियाँ, समस्या समाधन खोज, प्रदर्शन, प्रयोग, सामूहिकगतिविधियाँ, क्षेत्र अध्ययन वैयक्तिक अनुदेशन कार्यक्रम, कम्पयूटर सहायकअनुदेशन; विज्ञान मेला, विज्ञान प्रोजेक्ट, विज्ञान सीखनेसिखाने -मेंआई0सी0टी0 का प्रयोग, ई लर्निंग। निकटवर्ती परिवेश से सीखनेसिखाने-के संसाधनों को खोजना, और कक्षा में उनका प्रयोग करना; विज्ञान किट कानिर्माण; विज्ञान में प्रायोगिक कार्य के द्वारा सीखनासिखाना-(इस इकाई को भी सत्रीय कार्य के अंग के रूप में साक्षात अनुभव के माध्यम सेकराया जाएगा।

इकाई 5: आकलनः सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया तद्नुरूप शैक्षिक औरसहशैक्षिक आकलन के तरीके और उपकरणों का विकास; शिक्षक निर्मितउपलब्धि परीक्षण का विकास, विद्यार्थियों पर वितरण और रिपोर्टिंग; प्रदत्तकार्य, प्रश्नोत्तरी, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, रचनात्मक अभिव्यक्ति, समूहगतिविधि आदि के आकलन के तरीके

जीव विज्ञान शिक्षण

उद्देश्यः इसके द्वारा छात्राध्यापक अनुशासन के रूप में जीव विज्ञान की प्रकृति को समझसकेगें। वे जीव विज्ञान के विषयगत ज्ञान को संमृद्ध कर सकेगें। वे जीव विज्ञान कोसीखनेसिखाने की समझ का विकास कर सकेगें।-

इकाई 1: परिचयः विज्ञान की प्रकृति, विज्ञान की विधि, जीव विज्ञान के विशेष संदर्भमें, एक अनुशासन के रूप में जीव विज्ञान का विकास और समकालीन प्रवृत्तियाँएवं विमर्श, जीव विज्ञान, समाज और प्रौद्यौगिकी में अन्तःक्षेपण, जीव विज्ञानका अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध

इकाई 2: विषय ज्ञान की संमृद्धिः इसके अन्तर्गत माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिकस्तर के पाठ्यक्रम पर आधारित विषयगत ज्ञान को केन्द्र में रखकर परिप्रेक्ष्य काविकास किया जाएगा। यह कार्य गोष्ठियों और कार्यशालाओं के माध्यम सेकिया जाएगा। सम्भाव्य विषय क्षेत्रः जीवित दुनिया का, जैव प्रौद्योगिकीवंशानुक्रम और जीवन का विकास; कोशिका और कोशिका विभाजन; जीव औरपादप जगतः वर्गीकरण; जेनेटिक्स; पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी आदि

इकाई 3: जीव विज्ञान शिक्षणः विद्यालय स्तर पर विज्ञान के सीखनेसिखाने के -लक्ष्य एवं उद्देश्य, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की भूमिका में विज्ञान शिक्षण का स्थान,प्रचलित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन; नवाचारआधारित पाठ्यक्रम जैसे होशंगाबाद विज्ञान कार्यक्रम -को विश्लेषण विज्ञान केप्रचार में स्वंय सेवी संगठनों की भूमिका; जीव विज्ञान शिक्षण के सन्दर्भ मेंनिर्माणवाद की व्याख्या और निहितार्थ

इकाई 4: सीखनासिखानाः वैज्ञानिक घटनाओं के प्रति बच्चों की समझ-, बच्चों कीवैकल्पिक अवधारणाएँ और इसके शिक्षाशास्त्रीय निहितार्थ, विज्ञान केसीखनेसिखाने में प्रेक्षण-, प्रयोग, खोज और अन्तः प्रज्ञा की (सूझ) भूमिका;शिक्षण शास्त्रीय युक्तियाँ: समस्या समाधन खोज, प्रदर्शन, प्रयोग, सामूहिकगतिविधियाँ, क्षेत्र अध्ययन, अवलोकन, वैयक्तिक अनुदेशन कार्यक्रम, कम्पयूटरसहायक अनुदेशन; विज्ञान मेला, विज्ञान प्रोजेक्ट, विज्ञान सीखनेसिखाने में-आई0सी0टी0 का प्रयोग, ई लर्निंग। निकटवर्ती परिवेश से सीखनेसिखाने के-संसाधनों को खोजना, और कक्षा में उनका प्रयोग करना; विज्ञान किट कानिर्माण; क्षेत्र अवलोकन, व हरबेरियम का निर्माण; विज्ञान में प्रायोगिक कार्य केद्वारा सीखनासिखाना-(इस इकाई को भी सत्रीय कार्य के अंग के रूप में साक्षात अनुभव के माध्यम सेकराया जाएगा।

इकाई 5: आकलनः सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया तद्नुरूप शैक्षिक औरसहशैक्षिक आकलन के तरीके और उपकरणों का विकास; शिक्षक निर्मितउपलब्धि परीक्षण का विकास, विद्यार्थियों पर वितरण और रिपोर्टिंग; प्रदत्त कार्य,प्रश्नोत्तरी, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, रचनात्मक अभिव्यक्ति, समूह गतिविधि आदिके आकलन के तरीके

गणित शिक्षण

उद्देश्यः छात्राध्यापक गणित की प्रकृति को समझ सकेंगे। वे विद्यालय स्तर पर गणितशिक्षण के उद्देश्यों और शिक्षण शास्त्रीय युक्तियों से परिचित हो सकेंगे। वे विद्यार्थियों केदैनिक जीवन के गणितीय अनुभवों को शिक्षणशास्त्र का माध्यम बना सकेंगे।

इकाई 1: परिचयः गणित का इतिहास, गणित की प्रकृति गणितीय संक्रियाएँ, आगमनव निगमन विधि गणित में अभियुक्तियाँ व प्रमाण

इकाई 2: विषय ज्ञान की संमृद्धिः इसके अन्तर्गत माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिकस्तर के पाठ्यक्रम पर आधारित विषयगत ज्ञान को केन्द्र में रखकर परिप्रेक्ष्यका विकास किया जाएगा। यह कार्य गोष्ठियों और कार्यशालाओं के माध्यमसे किया जाएगा। सम्भाव्य विषय क्षेत्रःसंख्याएँ संक्रियाएँ, क्षेत्रमिति, समीकरण(एक चर व द्विचरपूर्णांक बीजगणित (ज्यामितीय, वाणिज्यिक गणित,प्रायिकता

इकाई 3: गणित शिक्षणः विद्यालय स्तर पर गणित सीखनेसीखाने के उद्देश्य -प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर गणित का पाठ्यक्रम, गणित की विभिन्नशाखाओं जैसेबीजगणित -, रेखागणित, त्रिकोणमिती आदि को पाठ्यक्रम मेंसमायोजन विद्यार्थियों की दैनिक गणित की समझ और इसके शिक्षाशास्त्रीयनिहितार्थ, गणित के सीखने के संदर्भ में पियाजे, ब्रूनर, आदि के सिद्धांतों काअनुप्रयोग अनुमान लगाना, समस्या प्रस्तावना जैसे कौशलों का शिक्षाशास्तरीयअनुप्रयोग

इकाई 4:सीखना-सिखाना: गणितीय संप्रत्ययों की प्रकृति, गणितीय संप्रत्ययों काआत्मसातीकरण, तुलना एवं विपरीती करण (Contrasting) प्रति उदाहरण देना, गणित शिक्षण के लिए शिक्षण शास्त्रीय युक्तियों का निर्माण और कक्षामें क्रियान्वयन: गणितीय खेल, समस्थिति द्वारा शिक्षण, इबारती सवालों कीप्रकृति और उपयोग, पूछताछ और खोज विधि, समस्या समाधान, समस्याप्रस्तावना विधि, सवाल हल करने के एक से अधिक तरीके। पाठ्य-पुस्तक, आई.सी.टी. आधारित सामग्री, गणित की सहायक सामग्री के रूप में नई प्रवृत्तियों जैसे जिओजेब्रा।

इकाई 5: आकलनः सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया तद्नुरूप शैक्षिक औरसहशैक्षिक आकलन के तरीके और उपकरणों का विकास; शिक्षक निर्मितउपलब्धि परीक्षण का विकास, विद्यार्थियों पर वितरण और रिपोर्टिंग; प्रदत्तकार्य, प्रश्नोत्तरी, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, रचनात्मक अभिव्यक्ति, समूहगतिविधि आदि के आकलन के तरीके

वाणिज्य शिक्षण

उद्देश्य: छात्राध्यापक वाणिज्य विषय की प्रकृति को समझ सकेंगे. वे विद्यालय स्तर पर, विशेषत: उच्चतर माध्यमिक स्तर पर, वाणिज्य शिक्षण के उद्देश्यों और शिक्षण शास्त्रीय युक्तियों से परिचित हो सकेंगे. वे विद्यार्थियों केदैनिक जीवन के वाणिज्य अनुभवों को शिक्षणशास्त्र का माध्यम बना सकेंगे।

इकाई 1: परिचयः वाणिज्य की प्रकृति ,संभावना ,शिक्षण विषय के रूप में वाणिज्य का स्थान ,विषय ज्ञान की संमृद्धिः इसके अन्तर्गत माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिकस्तर के पाठ्यक्रम पर आधारित विषयगत ज्ञान को केन्द्र में रखकर परिप्रेक्ष्यका विकास किया जाएगा। यह कार्य गोष्ठियों और कार्यशालाओं के माध्यमसे किया जाएगा।

इकाई 2:वाणिज्य शिक्षणः उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर वाणिज्यसीखने सिखाने के उद्देश्य, वाणिज्य का पाठ्यक्रम, वाणिज्य की विभिन्नशाखाओं का पाठ्यक्रम मेंसमायोजन, विद्यार्थियों की दैनिक वाणिज्य की समझ और इसके शिक्षाशास्त्रीयनिहितार्थ, विभिन्न शिक्षण कौशलों का शिक्षाशास्तरीयअनुप्रयोग

इकाई 3: सीखना सिखानाः-वाणिज्य विषयक संप्रत्ययों का प्रकृति, वाणिज्य विषयक संप्रत्ययों काआत्मसातीकरण, तुलना एवं विपरीती करण Contrastingप्रति उदाहरणदेना, वाणिज्य शिक्षण के लिए शिक्षण शास्त्रीय युक्तियों का निर्माण और कक्षामें क्रियान्वयनः शिक्षण विधियाँ, पूछताछ और खोज विधि, समस्या समाधान, समस्याप्रस्तावना विधि, सवाल हल करने के एक से अधिक तरीके। पाठ्युस्तक,आई.सी.टी. आधारित सामग्री, वाणिज्य की सहायक सामग्री के रूप में नई प्रवृत्तियाँ

इकाई 4: आकलनः सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया तद्नुरूप शैक्षिक औरसहशैक्षिक आकलन के तरीके और उपकरणों का विकास; शिक्षक निर्मितउपलब्धि परीक्षण का विकास, विद्यार्थियों पर वितरण और रिपोर्टिंग; प्रदत्तकार्य, प्रश्नोत्तरी, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, रचनात्मक अभिव्यक्ति, समूहगतिविधि आदि के आकलन के तरीके

TEACHING OF ENGLISH

Objective : To acquire information on current directions in English language teaching, to identify and be sensitive to the proficiency, interests and needs of learners, to practice learner centred methods and techniques in the classroom; enable the students to use technology to enrich language teaching, to facilitate the effective use of learning resources.

Unit 1: Fundamentals of Language: Importance of English in a multi-lingual society; factors affecting language learning: physical, psychological and social: role of language in life: intellectual, emotional, social and cultural development.

Unit 2: Method and Approaches: method and approaches: direct method, communicative approach, and constructivist approach: intra - inter correlation: prose, poetry, grammar and

composition. history, geography, mathematics, science, economics and commerce: principles and maxims of language teaching

Unit 3: Language acquisition Inside /Outsidethe Classroom: Listening: concept, significance and activities to develop listening: speaking: concept, significance and activities to develop speaking; reading: concept, methods (phonic, whole word), types (loud, silent, intensive, extensive and supplementary), techniques to increase speed of reading (phrasing, skimming, scanning, columnar reading, key word reading), Writing: types of composition (guided, free and creative), evaluating compositions, letter writing (formal, informal): supplementary skills: study skills (note taking and making), reference skills (Dictionary, Encyclopedia and Thesaurus).

Unit 4: Aspects of Language Teaching and Learning Resources: Planning a lesson, instructional objectives and specifications for prose: techniques (discussion, narration, questioning); methods (story-telling, dramatization); poetry: methods (recitation, song-action), techniques of appreciation: grammar: types (functional, formal), methods (inductive, deductive); learning resources: Computer Assisted Language Learning (CALL), library, language laboratory.

Unit 5: Professional Growth: Qualities of an English teacher and his/her professional growth; critical appraisal of an English text book; types of test items and development of achievement test in English.

Unit 6: Evaluation: Meaning and significance of comprehensive and continuous evaluation in English; diagnostic and remedial teaching; identifying learning difficulties in language; dealing with language difficulties of the learner.

वि.अ. 1: विद्यालय संपर्क कार्यक्रम

एक माह के लिए

*** विद्यालय दैनिकी लेखन * कक्षा अवलोकन * विद्यालय क्रियाकलाप अवलोकन एवं शिक्षण योजना निर्माण* केस स्टडी**

वृ.क्ष. 4: विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व

इकाई 1: विद्यालय प्रबंधन -अवधारणा एवं क्षेत्र; विद्यालय प्रबंधन के विभिन्न चरण; प्रबंधन के सिद्धांत - क्लासिकल, नियो-क्लासिकल, आधुनिक एवं शिक्षा के लिए उनके निहितार्थ. विद्यालय प्रबंधन में योजना निर्माण, वार्षिक कैलेंडर, दैनिक कार्यक्रम की योजना, समय सारणी, स्टाफ मीटिंग, छात्रों की समस्याएँ, मानिटरिंग, विद्यालयी संसाधनों का प्रबंधन

इकाई 2: विद्यालय संगठन समाज के एक लघु रूप में, विद्यालय का अन्य शैक्षणिक संस्थानों से संबंध - अध्यापक शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., एस.सी.ई.आर.टी., एन.सी.टी,ई., अन्य.

इकाई 3: नेतृत्व - अर्थ, परिभाषा, आधारभूत सिद्धांत, नेतृत्व के प्रकार - लोकतांत्रिक एवं विकेन्द्रित नेतृत्व, प्रभावी नेतृत्व के गुण, नेतृत्व शैली का विद्यालय प्रबंधन पर प्रभाव.

तृतीय सेमेस्टर

शिक्षा 007: विद्यालय विषय शिक्षण (द्वितीय सेमेस्टर के अनुसार)

इसके अंतर्गत छात्राध्यापक द्वितीय सेमेस्टर में किये गए शिक्षण विषय के शेष अंश को पूर्ण करेंगे तथा पाठयोजना आदि का अभ्यास, सूक्ष्म शिक्षण आदि जैसे शिक्षण के व्यावहारिक पक्ष का अभ्यास करेंगे.

वि.अ. 2: विद्यालय अनुभव कार्यक्रम (4 माह)

उद्देश्य: इसके अंतर्गत छात्राध्यापक विद्यालय में नियमित शिक्षक की भांति अध्यापन करेंगे एवं विद्यालय के समस्त क्रियाकलाप में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करेंगे. इस दौरान छात्राध्यापकों से अपेक्षा रहेगी कि वे पाठ योजना बनाना, विद्यालय के अन्य पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के लिए योजना बनाना, शिक्षण, मूल्यांकन, विद्यालय के अन्य शिक्षकों, छात्रों, उनके अभिभावकों एवं समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ सार्थक विमर्श करते हुए विद्यालयी अनुभव को समग्रता में ग्रहण करेंगे. उनके मूल्यांकन के निम्नलिखित मापदंड होंगे: शिक्षण, अधिगम एवं आकलन; उपलब्धि परीक्षण रिपोर्ट; क्रियात्मक अनुसंधान; सामुहिक प्रस्तुति; परियोजना (क्रियात्मक अनुसंधान के अतिरिक्त, जैसे कि समय सारणी, एक्टिविटी कैलेंडर, स्टुडेंट्स प्रोफाईल, यूनिट टेस्ट, क्लास टेस्ट, आदि) समुदाय के साथ अंतर्क्रिया (रिपोर्ट)

चतुर्थ सेमेस्टर

शिक्षा 008:ज्ञान और पाठ्यचर्या

इकाई 001: ज्ञान मीमांसा एवं शिक्षा का सामाजिक सन्दर्भ: ज्ञान मीमांसा की संकल्पना, सामाजिक शिक्षा की संकल्पना, ज्ञान और कौशल, अध्यापन और प्रशिक्षण, ज्ञान और सूचना, तर्क एवं विश्वास, विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षा, क्रियाकलाप, खोज एवं संवाद की संकल्पना - गाँधी, टैगोर, ड्यूई और प्लेटो के सन्दर्भ में

इकाई 002: शिक्षा, समाज और आधुनिक मूल्य; समाज, संस्कृति और आधुनिकता, औद्योगिकीकरण, लोकतंत्र एवं वैयक्तिक स्वायत्तता, अंबेडकर के विचारों के सन्दर्भ में आधुनिक मूल्य जैसे समानता, वैयक्तिक अवसर, सामाजिक न्याय एवं नैतिकता और शिक्षा; राष्ट्रीयता, वैश्विकता एवं धर्मनिरपेक्षता का शिक्षा से अंतर्संबंध - टैगोर एवं कृष्णमूर्ति के सन्दर्भ में.

इकाई 003: पाठ्यक्रम: अर्थ, प्रकृति, संकल्पना, उद्देश्य; पाठ्यचर्या की रूपरेखा, पाठ्यचर्या के निर्माण में सहभागी घटक, उपागमः विषय आधारित, कुशलता आधारित, विद्यार्थीकेन्द्रित; पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया; पाठ्यचर्या मूल्यांकन की प्रक्रियायें।पाठ्यचर्या निर्माण में शासन की भूमिका; पाठ्य-पुस्तक और पाठ्यक्रम के निर्माण में विभिन्न सामाजिक कारकों / घटकों की भूमिका

इकाई 004: पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम; पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम में सह-संबंध, विद्यालय में समय-सारणी का महत्व, पाठ्य-पुस्तक की विशेषताएँ, पाठ्य-पुस्तक विश्लेषण, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए सन्दर्भ साहित्य - जैसे पाठ्य-पुस्तक, टीचर्स - हैंडबुक, वर्क-बुक

शिक्षा 009: ऐच्छिक विषय**

शिक्षा 009-1: निर्माणवादी ज्ञानमीमांसा एवं शिक्षाशास्त्र

इकाई 1: निर्माणवाद: संकल्पना और सिद्धांत

निर्माणवाद की संकल्पना, प्रकार और अनुप्रयोग, जॉन ड्यूई, पियाजे, वायगोत्सकी, जोम्बतिस्ता विको, एम्यनुएल, ब्रूनर, ग्रेसर्फेल्ड, जर्जे का सिद्धांत

इकाई 2: निर्माणवादी ज्ञानमीमांसा

निर्माणवाद का ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण, शिक्षा में नई दिशा, निर्माणवाद के अनुसार ज्ञान की रचना, निर्माणवादी शिक्षा के तत्व और सिद्धांत

इकाई : 3निर्माणवादी शिक्षाशास्त्र

निर्माणवादी शिक्षा :प्रकृति ,प्रक्रिया, निर्माणवादी शिक्षा के तत्व ,निर्माणवादी कक्षा का निर्माण ,निर्माणवादी शिक्षक और उसकी भूमिकाएं ,निर्माणवादी शैक्षणिक रणनीति

इकाई : 4निर्माणवाद और अध्यापक शिक्षा,सूचना एवं प्रोद्योगिकी

अध्यापक शिक्षा में नया दृष्टिकोण,शिक्षक के विचारों में बदलाव ,शिक्षक निर्माण की प्रक्रिया और कार्यक्रमों में सुधार, सूचना एवं प्रोद्योगिकी में सुधार,पारंपरिक सूचना और निर्माणवादप्रोद्योगिकी की निर्माणवा ,दी रचना में भूमिका, पाठ्यक्रम में निर्माणवाद की भूमिकाएवं महत्व

शिक्षा 009-2: शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श

इकाई : 1संकल्पनानिर्देशन :

निर्देशन का स्वरुप और विस्तार,संकल्पनामार्गदर्शन :, शैक्षिक निर्देशन,व्यावसायिक और व्यक्तिगत निर्देशन की आवश्यकता ,राष्ट्रीय विकास के लिए निर्देशन निर्देशन की ऐतिहासिक ,पृष्ठभूमिउद्दे, श्य एवं सिद्धांत; तकनीक : टेस्ट (ए), बुद्धि, उपलब्धि, योग्यता, व्यक्तित्व। (बी)संचयी रिकॉर्ड, वास्तविक रिकॉर्ड, केस स्टडी, साक्षात्कार, सामाजिक तकनीक।

इकाई : 2व्यावसायिक निर्देशन

व्यावसायिक निर्देशन :तैयारी,नियुक्ति और अनुवर्तीव्यावसायिक जानकारी संग्रह ;विभिन्न पाठ्यक्रमों और व्यवसायों के बारे में जानकारी, शिक्षण सुविधाओं और रोजगार के अवसर,रोजगार के पैटर्नविश्लेषण -कार्य ; औरकैरियर प्रोफाइलव्यक्तिगत और समूह मार्गदर्शन :

इकाई : 3समायोजननिर्देशन

समायोजननिर्देशन, संकल्पना ,समायोजन परियोजनाओंऔर अपकी पहचान समायोजन-

इकाई : 4परामर्श

परामर्श – संकल्पना, विभिन्न परामर्श सिद्धांत और तकनीक, परामर्श के लिए साक्षात्कार की आवश्यकता , हाल की प्रवृत्तियों और मार्गदर्शन में शोध विद्यालयों में ,परामर्श और निर्देशन में अंतर ,परामर्श विधियाँ ; परामर्श और निर्देशनछात्रों के लिए परामर्श दुर्बल ,

शिक्षा 009-3: मानवाधिकार एवं शांति शिक्षा

इकाई : 1मानवाधिकार की अवधारणा

मानवाधिकार का अर्थ ;सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक सन्दर्भ ,सामाजिक ;क्षेत्र ,प्रकृति ,व्यापकता ,परिभाषा , समाज के वंचित वर्ग एवं ,दलित ,स्त्री ;बाल अधिकार ;मानवाधिकार की आवश्यकता एवं समकालीन परिदृश्य मानवाधिकार को सुनिश्चित करने में चुनौतियां ;मानवाधिकार

इकाई : 2मानवाधिकार का नीतिगत परिप्रेक्ष्य

मानवाधिकार के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे प्रयास ,मानवाधिकार के लिए अंतरराष्ट्रीय घोषणापत्र , मानवाधिकार के स्थिरत्व में अंतरराष्ट्रीय संघटन ,मानवाधिकार संबंधी घोषणापत्र के मुख्य तत्व एवं विशेषता भारती ;की भूमिकाय संविधानसामाजिक एवं सांस्कृतिक ,नागरिक अधिकार कानून ,कार आयोगमानवाधि , अधिकार कानून आदि

इकाई : 3शांति शिक्षा के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

शांति शिक्षा का उद्भव एवं विकास - ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में ;नकारात्मक एवं सकारात्मक शांति की अवधारणा ; दलित ए ,स्त्रीवं शान्ति शिक्षाशांति ;धर्म निरपेक्षता एवं शांति शिक्षा ,लोकतांत्रिक मूल्य ,सांस्कृतिक समन्वय ; की चुनौतियाँ- सामुदायिक एवं साम्प्रदायिक संघर्ष .आदि ,उग्रवाद ,भेद-वर्ग ,

इकाई : 4शांति शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य

शांति शिक्षा के सन्दर्भ में महात्मा गाँधी, टैगोरशांति शिक्षा के ;एवं दलाई लामा के विचार ,कृष्णमूर्ति ,अरबिंदो , सन्दर्भ में पाउलो फ्रेरे के विचार- क्रिटिकल कान्सशनेस शांति शिक्षा ,समालोचनात्मक चेतना के लिए शिक्षा / की विधियाँ- संवादशांति शिक्षा के प्रसा ;जाँच पड़ताल और मुक्त्यात्मक शिक्षा ,र में विद्यालय एवं शिक्षक की भूमिका

शिक्षा 009-4: आपदा प्रबंधन एवं शिक्षा

इकाई 1 -: आपदा का परिचय

आपदा की परिभाषा और प्रकार ,विभिन्न आपदाओं के कारण और उनके प्रभाव ,आपदा प्रबंधन चक्र ,अधिनियम और आपदा के कानूनी पहलू

इकाई 2 -: आपदा की स्थिति के लिए तैयारी

आपदा तैयारियां :व्यक्तिगत ,बहु मंजिली इमारतों वाली सोसायटी या स्वतंत्र मकान के एक समूह,कार्य स्थल , आपदा शमन के उपाय मेडिकल टीमों के ,संसाधन उपलब्धता : नियंत्रण केंद्र की स्थापना ,बचाव दल बनाना और उसकी तैनाती ,हताहत लोगों के लिए समुचित व्यवस्था एवं संबंधित रिकार्ड्सदुर्घटनाग्रस्त लोगों का , स्थल से निकास एवं संबंधित रिकार्ड्स-दुर्घटना

इकाई :3 -आपदा से बचाव और राहत

आपदा से बचाव: आपदा से बचाव के सिद्धांत ,बचाव प्रक्रिया ,आपदा की स्थिति में राहत कार्य राहत ,कार्य के प्रारंभिक चरणसर्वेक्षण पक्ष ,का निष्पादन राहत कार्य ,तत्काल राहत योजना ,

इकाई :4 -आपदा प्रबंधन के लिए शिक्षा

विद्यालयों में आपदा प्रबंध शिक्षा,आपदा प्रबंध शिक्षा के उद्देश्य ,आपदा प्रबंध शिक्षा का महत्व ,विद्यालयों की सुरक्षाआपदा प्रबंध की ज ,ानकारी एवं प्रात्यक्षिक कार्य

शिक्षा 009-5: योग शिक्षा

इकाई : 1योग का आधार एवं संकल्पना

योग का आधार ,पतंजली योग सूत्र,हठयोग प्रदीपिका घेरंदा ,संहिता, योग क्या है? योग के बारे में गलतफहमी , योग की धाराएं ,राजयोग :अष्टांग मार्ग ,आनंद मीमांसा

इकाई : 2योग प्रथाओं के सिद्धांत ,प्रैक्टिकल और शिक्षण तकनीक

आसन,प्राणायाम,क्रिया ,ध्यान,आठ कदम विधि :एकल समूह और डबल समूह अभ्यास,आसन,प्राणायामखेलों के , योजना एवं प्रबंधन ,नियमों की समझ ,खेलों का आयोजन ,एथलेटिक्स ,प्रकार

इकाई : 3योग और शारीरिक शिक्षा

योग अर्थ एवं महत्व,योगासन क्रिया एवं प्राणायाम करना,विद्यालय एवं कक्षाओं की गतिविधियों में योग का समावेश, शारीरिक शिक्षा:अवधारणा ,व्यायाम,नीतिगतपरिप्रेक्ष्य, शारीरिक शिक्षा में लेकर विभिन्न संस्थाओं ,विद्यालय)परिवार,मीडिया,एवं खेल संघटन(की भूमिका,शारीरिक कार्यक्रम

इकाई : 4योग और शारीरिक शिक्षा पाठ्यचर्या विद्यालय और शिक्षक:

स्वास्थ, योग एवं शारीरिक शिक्षा,विद्यालयीन पाठ्यचर्या का आलोचनात्मक विश्लेषण : समेकित पाठ्यचर्या एवं उपागम,योग का विद्यालयों में स्थान,योजना संसाधनों का सृजन ,

शिक्षा 009-6: एकात्म दर्शन एवं शिक्षा

इकाई : 1एकात्म दर्शन की संकल्पना

शिक्षा का अर्थ ,उद्देश्य ,प्रकृति ,स्वरुप ,एकात्म दर्शन की भारतीय अवधारणा एवं अर्थएकात्म दर् ,शन की पश्छात्य अवधारणा एवं अर्थ

इकाई : 2एकात्म दर्शन की विविध विचारधाराएं

एकात्म दर्शन ,महर्षि अरविन्द एवं उनके विचार ,एकात्म दर्शन की भारतीय एवं पाश्चात्य विचारधाराओं में अंतरपाठ्यचर्या में एकात्म दर्शन ,एकात्म दर्शन के उद्देश्य ,

इकाई : 3एकात्म दर्शन एवं शिक्षा

शिक्षा के उद्धेश्य एवं एकात्म दर्शन ,शिक्षा का पाठ्यचर्या एवं एकात्म दर्शन शिक्षण विधिया ,एवं एकात्म दर्शन शिक्षक एवं छात्र तथा,एकात्म दर्शन

इकाई : 4एकात्म दर्शन एवंशैक्षिक प्रबंधन

अनुशासन एवं एकात्म दर्शन ,विद्यालय एवं एकात्म दर्शन ,शैक्षिक प्रशासन एवं एकात्म दर्शन

शिक्षा 010: गाँधी एवं शिक्षा

इकाई 001: गांधी दर्शन: महात्मा गाँधी का जीवनदर्शन; विभिन्न व्यक्तियों का गाँधी जी के विचारों पर प्रभाव - गोखले, कस्तूरबा, पुतलीबाई, रस्किन, टालस्टाय; गांधी जी के सामाजिक विचार की मुख्य विशेषताएं; साउथ अफ्रीका में किये गए प्रयोग - फीनीक्स सेटलमेंट, टालस्टाय फ़ार्म

इकाई 002: गाँधी जी के विचारों की मूल अवधारणा - सत्य, अहिंसा, साधन और साध्य की पवित्रता, सत्य की अवधारणा, ईश्वर की अवधारणा, वर्तमान समय में गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता

इकाई 003: बुनियादी शिक्षा- अवधारणा, अन्तर्निहित मान्यताएं, पृष्ठभूमि एवं विकास, वर्धा समिति;कार्यात्मक साक्षरता, वयस्क शिक्षा, नयी सामाजिक व्यवस्था के लिए शिक्षा, सामुदायिक विकास, ग्रामीण विकास में गांधीजी के विचारों का योगदान.

इकाई 004: बुनियादी शिक्षा की पाठ्यचर्या: विश्लेषण एवं समीक्षा; उद्देश्य, संरचना, ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया; बुनियादी विद्यालय - संगठनात्मक स्वरूप, कार्यप्रणाली, समुदाय के साथ संबंध, बुनियादी विद्यालय में शिक्षक की भूमिका; वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता

वृ.क्ष.007: साहित्य में शिक्षा

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्राध्यापकों को पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त विभिन्न कालखंडों में सृजित साहित्य की धरोहर में संचित शिक्षा के उन तत्वों से अवगत कराना है जो कि प्रायः पाठ्य-पुस्तकों की परिधि से बाहर व्याप्त होती हैं, परन्तु जो मानवजीवन को सदैव समृद्ध करती है और मानव मूल्यों का विकास करती हैं. इसके अंतर्गत मुख्यतः प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य - जिनमें उपनिषद, पंचतंत्र, जातक कथा, इत्यादि सम्मिलित हैं; आधुनिक एवं समकालीन साहित्य - जैसे कि महादेवी वर्मा, विनोबा भावे, महादेवी वर्मा, श्रीलाल शुक्ल, गिजू भाई इत्यादि हैं. इसके अतिरिक्त यह पाठ्यक्रम स्थानीय कथाएँ, लोकोक्ति, जीवन कथाएँ आदि को भी समाहित करेगा.इस पाठ्यक्रम का मूल्यांकन मुख्यतः टयूटोरिअल, शैक्षिक विमर्श एवं असाईनमेंट आदि के माध्यम से होगा.

वृ.क्ष. 008: समावेशी विद्यालयी शिक्षा

इकाई 1 :समावेशी विद्यालय

समावेशी विद्यालय की संकल्पना, निर्माण ,निःशक्त एवं विशिष्ट बालकों के समावेशन की संकल्पना , निःशक्तता की मनोसामाजिक अवधारणा, मानसिक घटक,निःशक्तता के प्रतिमान समावेशित शिक्षा में , आनेवाली समस्याये

इकाई २ :राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986

उद्देश्य तथा सुझावमानसिक शारीरिक और,समानता के लिए शिक्षा , रूप से दुर्बल बालकों की शिक्षा बालक का , वैयक्तिक विभिन्नताये,दुर्बल व्यक्ति के अधिकार,अधिकार

इकाई ३ :शिक्षा का अधिकार 2009

शिक्षा के अधिकार के उद्देश्य तथा सुझावशारीरिक और मानसिक दुर्बल छात्रों का सामान्य विद्यालयों में , भी स्कूलोंका समावेशनस,सर्व शिक्षा अभियान,समावेश

इकाई ४ :समावेशित शिक्षा में अंतर्भूत घटक

अध्ययनार्थी के जरुरत के अनुसार शिक्षा में बदलावऔर शिक्षानीति ,प्रशासक,शिक्षक,समाज,छात्र,वातावरण , आनेवाली बाधाओंको दूर करना,शिक्षा संस्थओंको भेट,निर्माता सभी का सक्रीय सहभाग

वृ.क्ष. 009: अस्मिता एवं आत्मबोध

इकाई 1 : अस्मिता की अवधारणा

स्वयंकेबारेमेंछात्र-शिक्षकोंकीसमझका विकास,एकव्यक्तिकेरूपमेंऔरएकशिक्षककेरूपमेंस्वयंका विकास,समाजीकरण एवं 'स्व'का विकासएक ,शिक्षककीपहचान,अस्मिता निर्माण एवं मनो-सामाजिक परिस्थितियाँ, व्यक्तिगतविकास,अस्मिता विकास में पारस्परिक संबंध एवं संचार-कौशल की भूमिका.

इकाई 2 : 'स्व' की पहचान

'स्व' की पहचान का विकास, सांस्कृतिक पहचान, अकादमिक पहचान, वैयक्तिक पहचान, छात्राध्यापक के रूप में पहचान का निर्माण, शिक्षक के रूप में 'स्व' का निर्माण, व्यक्तिभिन्नता की पहचान,- लिंग, रिलेशनल, सांस्कृतिक,अंतर्निहितमान्यताओं, और रूढ़ियोंसेउत्पन्नपूर्वाग्रह,व्यक्तिगतआख्यान, जीवनकीकहानियाँ, समूहबातचीत, फिल्मसमीक्षाआदि के माध्यम से शिक्षक अस्मिता की समझ, सपनों, आकांक्षाओं, कवितासहितआत्मअभिव्यक्तिकेविविधरूपोंकेमाध्यमसे अस्मिता का निर्माण. (यह विषय मुख्यतः कार्यशाला, विशेष समूह-चर्चा, एवं अन्य गतिविधियों के माध्यम से संचालित होगा.)

इकाई 3 :अस्मिता और पहचान की समीक्षा

अनुभवोंकीसमीक्षा ,सीमाओंऔरक्षमता ,अलग-अलगबच्चोंकेमामलेकेअध्ययन / जीवनी / कहानियोंकोसाझाकरना,समकालीनकिशोरावस्था / युवाओंकेमुद्दे, अभिव्यक्तिकेविभिन्नतरीके ,चिंतनशीलपत्रिकाओंका विकास,पत्रिकाओंकाइस्तेमाल|

वृ.क्ष.010: जेंडर,विद्यालय और समाज

उद्देश्यः इसके द्वारा छात्राध्यापकों को जेंण्डर विमर्श के विभिन्न पक्षों से परिचित करायाजाएगा। वे विद्यालय , समाजऔर जेंडर के परिप्रेक्ष्य के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करसकेगें।

इकाई 1: परिचयः जेंडर, लिंग, पितृसत्ता, स्त्रीत्व और पुरूषत्व; जेंडररूढ़ियाँ-;जेंडर के मनोसामाजिक परिप्रेक्ष्यः धुर नारीवादी (रैडिकल), समाजवादीनारीवादी

इकाई 2:जेंडर आधारित समाजीकण की प्रक्रियाः जेंडर आधारित पहचान के विकास मेंपरिवार, समुदाय, विद्यालय और अन्य सामाजिक संगठनों कृत समाजीकरणकी भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन, भारतीय सन्दर्भ में हुए नृजातीयअध्ययन

इकाई 3: लड़कियों की शिक्षाः असमानता और प्रतिरोध, भारत में महिला शिक्षा काइतिहास; भारत में लड़कियों की शिक्षा की वर्तमान स्थिति व चुनौतियाँ, शिक्षाके अवसरों की असमानता की व्याख्या स्त्रीवादी दृष्टिकोण से; मीडिया औरअन्य लोकप्रिय माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण

इकाई 4: विद्यालयों में जेंडर असमानताः स्कूली अनुभवों जैसेपाठ्यचर्या -, शिक्षणशास्त्र और विद्यालयी गतिविधियों की स्त्रीवादी दृष्टि से व्याख्या; जेंडर केसन्दर्भ में प्रच्छन्न पाठ्यक्रमः कक्षागत प्रक्रियाओं द्वारा जेंडररूढ़ियों का-पुर्नबलन;जेंडर संवेदनशील शिक्षा शास्त्र, जेंडर की दृष्टि से विद्यालयीअनुभवों पर मनन और युक्तियाँ; शिक्षकों की संवेदनशीलता